Roll No. ..... Total Pages: 04

2116

B.A. SECOND YEAR EXAMINATION, 2019

HINDI LITERATURE

Paper – I

काव्य

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

Answer any two questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड – अ

प्र.1 सभी प्रश्न अनिवार्य हैं :

(1) 'पति बनैं चारमुख पूत बनैं पाँच मुख,
नाती बनैं षट मुख तदपि नई नई। यह पद किसकी वंदना से संबंधित है?

(2) मतिराम की उस रचना का नामोल्लेख कीजिए जिसकी रचना बूँदी नरेश भावसिंह की आज्ञा से हुई थी?

(3) ऋतु वर्णन के लिए कौन–सा रीतिकालीन कवि जाना जाता है?

(4) पद्माकर का मूल नाम बताते हुए उनके द्वारा रचित किन्हीं दो ग्रंथों के नाम लिखिए।

(5) ''ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है''
उक्त पंक्तियाँ किसके लिए प्रयुक्त हुईं हैं?

(6) अपने काव्य में श्रीकृष्ण और राधा के लिए 'सुजान' पद का प्रयोग किस कवि ने किया था?

(7) महाकवि देव कितने ग्रन्थों के प्रणेता बताये जाते हैं? किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

(8) 'देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर' यह पंक्ति किस कवि के काव्य–कौशल का संकेत करती है?

(9) किन्हीं दो रीतिमुक्त कवियों का नाम बताइए।

(10) काव्य–गुण किसे कहते हैं? किसी एक काव्य–गुण को उदाहरण सहित समझाइएं।

खण्ड – ब

इकाई – I

प्र.2 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :–

बालक मृनालनि ज्यों तोरि डारैं सबै काल,
कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुख कों।
विपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम,
पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुष कों।
दूरि के कलंक–अंक भय–सीस–ससि सम,
राखत है केसोदास दास के वपुष कों।
सांकरे की सांकरनि सनमुख होत तोरैं,
दसमुख मुख जोवैं, गजमुख मुख कों।।

अथवा

प्र.3 भाल पै जाके कलानिधि है बौ साहिब ताप हमारे हरैगो।
अंग में जाके विभूति भरी बौ संपति मौन में भूरि भरैगो।
घातक है जो मनोभावक कौ मन पातक वाही के जार जरैगो।
दास जो सीस पै गंग धरै रहै ताकी कृपा कहो कौन तरैगो।।

इकाई – II

प्र.4 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तौर्‌यो है पिनाक नाकपाल बरसत फूल,
सेनापति कीरति बखाने रामचन्द की।
लै कैं जयमाल, सिय बाल है बिलोकि छवि,
दसरथ लाल के बदन–अरविंद की।
परी प्रेम–फंद, उर बाढ्‌यौ है अनंत अति,
आछी मंद–मंद चाल चलति गयंद की।
बरन कनक बनी, बानक बनक आई,
झनक मनक बेटी जनक नरिंद की।।

अथवा

प्र.5 पद्‌माकर की काव्य–कला पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

इकाई – III

प्र.6 भूषण वीर रस के अद्वितीय कवि हैं। इस कथन के आधार पर भूषण के काव्य में वर्णित वीर रस की विवेचना कीजिए।

अथवा

प्र.7 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

आँखिन मूँदिबो बात दिखावत,
सोवनि जागनि बातहि पेखि लै।
बात–सरूप अनूप अरूप है,
भूल्यौ कहा तू अलेखहि लेखि लै।
बात की बात सुबात विचारिबो,
सूछमता सब ठौर बिसेखि लै।
नैननि–काननि बीच बसे,
घनआनंद मौन–बखान सु देखि लै।।

इकाई – IV

प्र.8 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

ऐसो जो हौं जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
एरे मन मेरे, हाथ–पाँव तेरे तोरतो।
आजु लौं हौं कत नर–नाहन की नाहीं सुनि,
नेह सों निहारि बदन निहोरतो।
चलन न देतों 'देव' चंचल अचल करि,
चाबुक चितावनीन मारि मुँह मोरतो।
भारो प्रेम–पाथर नगारौ दै गरे सों बाँधि,
राधावर–विरद के बारिधि मैं बोरतो।।

अथवा

प्र.9 'बिहारी का काव्य गागर में सागर है' के आधार पर समासिकता को पुष्ट करते हुए कला पक्ष की विवेचना कीजिए।

इकाई – V

प्र.10 रीतिकालीन स्वच्छंद काव्यधारा की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अथवा

प्र.11 काव्य–गुण की परिभाषा देते हुए काव्य–गुणों को उदाहरण सहित समझाइए।

खण्ड – स

प्र.12 ''केशवदास की संवाद–योजना सर्वश्रेष्ठ है''। कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

प्र.13 पाठ्य–पुस्तक में संकलित अंश के आधार पर सेनापति की 'राम–कथा' का वर्णन कीजिए।

प्र.14 रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ उदाहरण सहित देते हुए उसके भेदों को विस्तार से समझाइए।

प्र.15 रस की परिभाषा देते हुए निम्नलिखित रसों को उदाहरण सहित समझाइए–

(अ) श्रृंगार रस लक्षण एवं उदाहरण
(ब) वीर रस लक्षण एवं उदाहरण
(स) भयानक रस लक्षण एवं उदाहरण
(द) वीभत्स रस लक्षण एवं उदाहरण